नारी शक्ति वंदन अधिनियम

पंचायत से पार्लियामेंट तक महिला सशक्तिकरण

केन्द्र की राजग नीत नरेन्द्र मोदी सरकार 16 से 18 अप्रैल को संसद के विशेष सत्र के माध्यम से नारी शक्ति वंदन अधिनियम पर व्यापक चर्चा कर एक महत्वपूर्ण राजनीतिक संदेश मजबूती से पेश करना चाहती है। महिला सशक्तिकरण और शासन में भागीदारी को लेकर कुछ छोटे छोटे पहलुओं को छोड़कर लगभग सभी राजनीतिक दलों की सहमति दिखाई देती है। हां यह एक अलग बात है कि पं बंगाल और तमिलनाडु विधानसभा चुनाव प्रचार के बीच संसद में इस पर चर्चा को लेकर मत मतान्तर हो सकता है।

देश ने आजादी के बाद संसदीय लोकतंत्र का रास्ता अख्तियार किया और समाज के सभी वर्गों को शासन में भागीदारी के लिए उचित आरक्षण का प्रावधान किया।गत शताब्दी के नवें दशक के अन्त में 1989 में तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गांधी ने पंचायती राज और नगर निकाय में महिला आरक्षण का प्रस्ताव रखा। वर्ष 1992 में राजीव गांधी की मंशा का सम्मान रखते हुए नरसिंह राव सरकार ने 73 वें और 74 वें संशोधन के माध्यम से पंचायती राज और नगर निकाय चुनाव में 33 प्रतिशत महिला आरक्षण कर दिया। इसके परिणामस्वरूप आज देश में लगभग 14 लाख से अधिक महिला जनप्रतिनिधि चुने जाते हैं। देश के कुछ राज्यों में तो महिला आरक्षण पचास प्रतिशत तक है।

लोकसभा और विधानसभा में महिला आरक्षण को लेकर 1996 में देवगोडा और 1997-98 में अटल बिहारी वाजपेई ने भी प्रयास किया लेकिन असफल रहे। वर्ष 2008 यूपीए नीत मनमोहन सिंह की सरकार ने राज्यसभा में विधेयक पेश किया और 2010 में राज्यसभा ने उसे पारित भी कर दिया लेकिन लोकसभा में वह उसे पेश नहीं कर सकी। लोकसभा 2014 में भंग होने साथ ही इस विधेयक की समाप्ति हो गई।

वर्तमान की राजग नीत नरेन्द्र मोदी सरकार 2023 में लोकसभा और राज्यसभा दोनों में इसे पारित करने में सफल रही।इसका लोकसभा में 454 सदस्यों और राज्यसभा में 214 सदस्यों ने समर्थन किया। इससे लगता है कि कुछ छोटे छोटे पहलुओं को छोड़कर राजनीतिक दलों की लगभग आम सहमति है। हमारे देश में महिला सशक्तिकरण को लेकर गंभीरता का पता इससे चलता है कि बिना महिला आरक्षण के भी श्रीमती इंदिरा गांधी प्रधानमंत्री बनी तो प्रतिभा पाटिल और द्रोपदी मुर्मू राष्ट्रपति बनी है।कई राज्यों में मुख्यमंत्री और राज्यपाल के रूप में महिलाओं ने सफल नेतृत्व दिया है।

नारी शक्ति वंदन अधिनियम से लोकसभा और विधानसभा में 33 प्रतिशत महिला आरक्षण का रास्ता प्रशस्त होगा। एक अनुमान के मुताबिक लोकसभा में परिसीमन के बाद सदस्यों की संख्या 543 से बढ़कर 816 हो जाएगी । इनमें 273 महिला जनप्रतिनिधि होगी। परिसीमन का आधार 2011 की जनगणना को बनाया जा रहा है जिसके चलते 31मार्च 2029 से यह व्यवस्था लागू हो जाएगी। परिसीमन के साथ ही महिला आरक्षण की सीटें भी बारी बारी से बदलती जाएगी। हालांकि महिला आरक्षण का यह प्रावधान राज्य सभा और राज्य विधान परिषद में लागू नहीं होगा। लोकसभा और विधानसभा क्षेत्र में अजा,जजा आरक्षण में भी 33 प्रतिशत महिला आरक्षण रहेगा।

कुछ राजनीतिक दलों ने अन्य पिछड़ा वर्ग, अल्पसंख्यक के लिए महिला आरक्षण को लेकर सवाल उठाए हैं तो दक्षिण भारत के क्षेत्रीय दलों को परिसीमन की नवीन व्यवस्था में अपने राज्य में लोकसभा सीटों की संख्या को लेकर आशंकाएं हैं। देखना है कि तीन दिन के इस विशेष सत्र में बदलती अंतरराष्ट्रीय राजनीति और भारत की आंतरिक राजनीतिक परिदृश्य में क्या बदलाव होते हैं।

दिनेश श्रीमाली
वरिष्ठ चिंतक विचारक
राजसमंद

यादें शेष....

गोपेंद्र कु सिन्हा गौतम, औरंगाबाद बिहार मो.9507341433

चुलबुली और शोख सुरों की मलिका आशा ताई अब? सिर्फ गीतों में मिलेगीं - गोपेंद्र

भारत के प्रख्यात पार्श्वगायिका आशा भोंसले का रविवार 12 अप्रैल 2026 को मुम्बई के ब्रीच कैंडी अस्पताल में 92 साल की आयु में कार्डियक अरेस्ट के कारण अंतिम सांस लीं। संगीत के संसार से एक ऐसी खनकती हुई आवाज़ हमें अलविदा कह गई, जिसने 7 दशकों तक करोड़ों दिलों की धड़कनों को अपने साथ थिरकने को मजबूर कर दिया। उनकी काया भले ही अब हम लोगों के सामने नहीं रहेगा लेकिन सुर युग- युगांतर तक भारत भूमि के फिजाओं में मधुर रस घोलती रहेगी।

आशा भोंसले का देहावसान केवल एक गायिका का जाना नहीं, बल्कि भारतीय संगीत के एक स्वर्णिम अध्याय का समापन है। उन्होंनेने अपने लम्बे करियर में 12,000 से ज्यादा गीतों में अपनी आवाज दी। उनके हज़ारों गीत आज भी लोकप्रिय हैं ! संगीतकार ओ पी नैय्यर के लगभग सारे गीत आशा भोंसले ने ही गाये। उनका जन्म 8 सितम्बर 1933 को महाराष्ट्र के सांगली में हुआ था। छोटी उम्र से ही उन्होंने गाना शुरू कर दिया था। उनके पिता दीनानाथ मंगेशकर भी बड़े संगीतकार थे।लता मंगेशकर उनकी बड़ी बहन थीं।

10 साल की छोटी उम्र में ही उन्होने मराठी फिल्म 'माझा बाळ' के लिए पार्श्वगायन किया था। हिन्दी फिल्मों में उनकी गायकी के सफ़र शुरूआत फिल्म चुनरिया से हुई थी। 2008 में भारत सरकार ने उन्हें पद्म विभूषण से सम्मानित किया जबकि 2000 में दादा साहेब फाल्के सम्मान से सम्मनित की गयी थीं।आशा जी की आवाज़ में वह दुर्लभ लचीलापन था, जो शास्त्रीय बंदिशों से लेकर चंचल कैबरे और रूहानी ग़ज़लों तक को समान अधिकार से जीता था।

साबित किया उम्र महज़ एक संख्या है-उन्होंने साबित किया था कि उम्र महज़ एक संख्या है, उनकी ऊर्जा और प्रयोगधर्मिता अंतिम समय तक युवाओं को प्रेरित करती रहीं। एक समय में जहां लता जी की आवाज क्लासिकल या गंभीर गीतों के लिए जानी जाती थी तो आशा जी की आवाज का इस्तेमाल संगीतकार चुलबुलेपन और गानों में एक मस्ती भरी कशिश के लिए करते थे।

आशा जी के गाए कुछ गाने कभी भुलाए नहीं जा सकते।जैसे - 'दम मारो दम ', 'पिया तू अब तो आजा ', 'चुरा लिया है तुमने जो दिल को ', 'इन आंखों की मस्ती ', 'आओ हुजूर तुमको ', 'कजरा मोहब्बत वाला ', 'ये मेरा दिल यार का दीवाना ', 'मेरा कुछ सामान 'आदि।

संघर्ष से शुरूआत-जब वे महज 9 वर्ष की थीं, तब उनके पिता का निधन हो गया। परिवार आर्थिक संकट से जूझ रहा था। उन्होंने केवल दस साल की उम्र में ही भाई-बहनों के परवरिश हेतु गाना शुरू कर दिया था।16 साल की उम्र में उन्होंने परिवार की मर्जी के खिलाफ बहन लता मंगेशकर के निजी सचिव 31 वर्षीय गणपत राव से भागकर शादी कर ली। लता ने उनसे बात करना बंद कर दिया। परिवार ने उन्हें त्याग दिया। शादी सफल नहीं हुई और टूट गई।वे दो बच्चों के साथ वापस आईं और तीसरे बच्चे के साथ गर्भवती थीं।कोई पैसा नहीं। कोई सहारा नहीं। तीन बच्चों को खिलाना था।वे फिर से गाने लगीं। 1950 के दशक में उन्हें केवल वे गाने मिले जो लता, गीता दत्त और शमशाद बेगम ने ठुकरा दिए थे। वैंप के गाने। कैबरे नंबर। सी-ग्रेड फिल्में।उन्होंने हर एक गाया। क्योंकि उनके बच्चों को खाना चाहिए था।फिर ओ.पी. नैय्यर आए।

दूसरी शादी आरडी बर्मन के साथ जिनका आजीवन साथ निभाया-1980 ई. में आशा जी ने सचिन देव बर्मन के बेटे 'राहुल देव बर्मन' (पंचम दा) से विवाह किया। जिसे आशा ताई ने राहुल देव वर्मन के अंतिम सांसो तक सफलतापूर्वक निभाया। आरडी बर्मन आशा ताई के जीवन में नई किरण बनकर आए और फिर उनकी दुनिया तेजी से बदलने लगी।दम मारो दम,पिया तू अब तो आजा, चुरा लिया है तुमने...

उन्होंने इन गानों को सिर्फ नहीं गाया। वे खुद उन गानों में बदल गईं।1995 में 62 साल की उम्र में उन्होंने रंगीला रे गाया और उस पूरी पीढ़ी को चुप करा दिया जिसने उन्हें असफल लिख दिया था।2011 में गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स ने पुष्टि की जो भारत पहले से जानता था।

संगीत इतिहास में सबसे ज्यादा रिकॉर्डिंग करने वाली कलाकार-12000 गाने। 20 भाषाएं। 8 दशक। शुरू में वे वैसे गाने गाती थीं जो नामचीन गायक- गायिका गाने से इंकार कर देते थे। शुरुआत में जिसे, कोई अपने गानों के लिए लेना नहीं चाहता था, वह लड़की कई पीढ़ी की आवाज बन गई।अब इस जहां में कोई दूसरी आशा भोंसले कभी नहीं होगी।

सम्मान एवं विशेष पहचान-1997 मई आशा ताई पहली भारतीय गायिका बनी जो 'ग्रेमी अवार्ड के लिए नामांकित की गईं (उस्ताद अली अकबर खान के साथ एक विशेष एलबम के लिए) आशा ताई 'सत्तरहवी महाराष्ट्र स्टेट अवार्ड' प्राप्त कीं। भारतीय सिनेमा में उत्कृष्ट योगदान के लिए सन 2000 में 'दादा साहेब फाल्के अवार्ड' से सम्मानित की गईं। उन्हें साहित्य में डॉक्टरेट की उपाधि से अमरावती विश्वविद्यालय एवं जलगाँव विश्वविद्यालय द्वारा सम्मानित किया गया। 'द फ्रिडी मरकरी अवार्ड' कला के क्षेत्र में उत्कृष्ट उपलब्धियों के लिए आशा ताई को इस खास पुरस्कार से सम्मानित किया गया। नवम्बर 2002 में आशा जी को 'बर्मिंघम फिल्म फेस्टिवल' विशेष रूप से समर्पित किया गया। 'पद्मविभूषण' के द्वारा राष्टपति प्रतिभा देवी सिंह पाटिल ने 5 मई 2008 को आशा ताई को सम्मानित किया। यह सम्मान भारत सरकार के महत्वपूर्ण सम्मानो में है।

राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार-1981- 'दिल चीज क्या है।.. '(उमरॉव जान) 1986 'मेरा कुछ सामान... '(इजाजत)

मराठी संगीत-लता मंगेसकर के साथ आशा ताई मराठी संगीत की सिरमौर रही हैं। (क्योंकि मराठी उनकी मातृभाषा थी)। आशा भोसले ने मराठी भाषा की अनेको गीत गाईं, जिनमे प्रसिद्ध कविओं की कविताएं भी शामिल थी, जो भाव गीत के रूप में प्रसिद्ध हैं। यथा प्रसिद्ध एलबन 'रूतु हिरावा'('ग्रीन सीजन') जो श्रीधर पाडके द्वारा रचित है। अपने भाई हृदयनाथ मंगेसकर द्वारा संगीतबद्ध आशा जी के कई प्रसिद्ध गीत है। आशा ताई द्वारा गाए मराठी भजन काफी प्रचलित और प्रसिद्ध है।

फिल्म जो मिल का पत्थर साबित हुई-आशा ताई के गायिकी के कैरियर में चार फिल्मे मिल का पत्थर, साबित हुई– नया दौर (1957), तीसरी मंजिल (1966), उमरॉव जान (1981) और रंगीला (1995)। नया दौर (1957):– आशा भोसले जी की पहली बड़ी सफल फिल्म बी. आर. चोपड़ा की 'नया दौर'(1957) थी। मो. रफी के साथ गाए उनके गीत यथा 'माँग के हाथ तुम्हारा....', 'साथी हाथ बढ़ाना...' और 'उड़े जब जब जुल्फे तेरी...' शाहिओ. पी. नैयर द्वारा संगीतबद्ध एक खास पहचान दी। आशा जी ने ओ.पी. नैयर के साथ पहले भी काम किया था पर यह पहली फिल्म थी जिसके सारे गीत आशा जी प्रमुख अभिनेत्री के लिए गाई थी। प्रोड्यूसर बी. आर. चोपडा ने नया दौर में उनकी प्रतिभा की पहचान कर आने वाली बाद की फिल्मों में पुनः मौका दिया। उनमे प्रमुख फिल्म– वक्त, गुमराह, हमराज, आदमी और इंसान और धुंध आदि है। तीसरी मंजिल (1966):- आशा भोसले ने राहुल देव वर्मन की 'तीसरी मंजिल'(1966) से काफी प्रसिद्ध हुई। जब पहले उन्होने गाने की धुन सुनी तो गीत 'आजा आजा...' इस गीत को ...इनकार कर दिया था, जो वेस्टर्न डांस नम्बर पर आधारित थी। तब आर. डी. वर्मन ने संगीत ...दलने का प्रस्ताव आशा जी को दिया किंतु आशा जी ने यह चैलेंज स्वीकार करते हुए गीत गाए। 10 दिन के अभ्यास के बाद जब अंतिम तौर पर यह खास गीत आशा जी ने गाए तो खुशी के कायल आर. डी. वर्मन ने 100 रूपये के नोट आशा जी के हाथ में रख दिए। इस फिल्म के अन्य गीत - ओ ... और ओ मेरे सोना रे.... ये ...भी गीत रफी जी के साथ तहलका मचा दिया। शम्मी कपूर इस फिल्म के नायक ने एक बार कहा था 'यदि में पास मो. रफी इस फिल्म के गीतो को गाने के लिए नहीं होते तो मै आशा भोसले को यह कार्य देता '। उमराव जान (1981):- रेखा अभिनित 'उमराव जान'(1981) आशा जी ने गज़ल गाया यथा- दिल चीज क्या है।..., इन आँखों की मस्ती के..., ये क्या जगह है दोस्तों... और जुस्त जु जिसकी थी।..। इन गज़लों के संगीतकार खय्याम थे जिन्होने आशा जी से सफलतापूर्वक गज़लो को गाने के लिए स्वरों के उतार चढाव को समझाया। आशा जी स्वयं आश्चर्यचकित थी कि वह इन गज़लो को सफलतापूर्वक गाई है। इन गज़लों ने आशा जी को प्रथम राष्ट्रीय पुरस्कार दिलाया और उनकी बहुमुखी प्रतिभा साबित हुई। रंगीला (1995):- सन 1995 में 62 वर्षीय आशा जी ने युवा अभिनेत्री उर्मिला मातोंडकर के लिए फिल्म रंगीला में गाई। इन्होंने फिर अपने चाहनेवालों को आश्चर्यचकित कर दिया। सुपर हिट गीत यथा- तन्हा तन्हा... और रंगीला रे... गीत ए. आर. रहमान के संगीत निर्देशन में गाई जो काफी प्रसिद्ध हुआ। बाद में कई अन्य गीतों को ए. आर. रहमान के निर्देशन में गाई। तन्हा तन्हा... गीत काफी प्रसिद्ध हुआ और आज भी लोग गुनगुनाते हैं।दक्षिण एशिया की प्रसिद्ध गायिका के रूप में आशा जी ने गीत गाए।

गायकी के हर क्षेत्र में हाथ आजमाया- फिल्म संगीत, पॉप, गज़ल, भजन, भारतीय शास्त्रीय संगीत, क्षेत्रीय गीत, कव्वाली, रवीन्द्र संगीत और नजरूल गीत इनके गीतों में सम्मिलित है।

14 से ज्यादा भाषाओं में गाए गीत-उन्होंने चौदह से ज्यादा भाषाओं में गीत गाए यथा- मराठी, आसामी, हिन्दी, उर्दू, तेलगू, मराठी, बंगाली, गुजराती, पंजाबी, भोजपुरी, तमिल, अंग्रेजी, रशियन, जाइच, नेपाली, मलय और मलयालम।महान गायक किशोर कुमार आशा जी के सबसे मनपसंद गायक थे।अब सिर्फ गीतों में मिलेगी आशा ताई। विनम्र श्रद्धांजलि।

सत्य की खोजः

मत-मतांतरों के जाल से परमात्म तत्व की ओर

भटकाव का चक्र और आवागमन का रहस्य :-संसार में निरंतर नए-नए मतों और विचारधाराओं का निर्माण हो रहा है। आराधना की विविध पद्धतियाँ,अलग-अलग मान्यताएँ और परंपराएँ अध्यात्म के मूल तत्व को ओझल कर देती हैं। यही भटकाव 'आवागमन का चक्र' है, जिसमें जीव धुरी के चक्र की भाँति घूमता रहता है। जब तक इस चक्र से बाहर निकलने की युक्ति नहीं समझी जाती, तब तक वास्तविक शांति और आत्म बोध संभव नहीं हो पाता। जैसा कि कबीर साहब ने जीव को सचेत करते हुए कहा है-

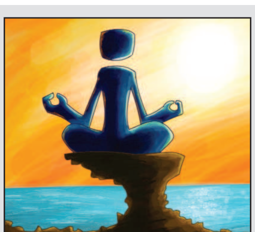

आज का युग ज्ञान-विज्ञान,अध्यात्म तत्व की प्रगति का युग है, फिर भी एक विडंबना स्पष्ट दिखाई देती है—अध्यात्म के गूढ़ एवं अंतर्निहित भावों को गहराई से न समझ पाने के कारण मनुष्य नाना मत-मतांतरों के जाल में उलझता जा रहा है। सत्य की खोज में निकला जीव बाहरी आडंबरों, विविध विधियों और जटिल रीति-रिवाजों के बीच भटककर रह जाता है। परिणामस्वरूप, वह स्वयं भी भ्रमित होता है और दूसरों को भी उसी उलझन में डाल देता है।

ज्यों नैनो में पुतली, त्यों मालिक घट माहि।
मूरख लोग न जानहि, बाहर ढूंढन जाहि।।

पंचतत्व का चोला और आत्मबोधः- संत कबीर ने मानव शरीर को पंचतत्वों से निर्मित 'चोला' बताया है—पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश। यह शरीर साधना का साधन है, न कि अभिमान का विषय। पंचतत्वों को संयम और साधना द्वारा एकाग्र कर, 'पंच पिचकारी' के माध्यम से मन के विकारों—काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार—को बाहर निकालना ही सच्ची साधना है। मिट्टी के इस शरीर पर अभिमान करना व्यर्थ है। संत कबीर साहब का यह दोहा जीवन का यथार्थ उद्घाटित करता है—

माटी कहे कुम्हार से, तू क्या रौंदे मोहे।
एक दिन ऐसा आएगा, मैं रौंदूँगी तोहे।।

यह संदेश स्पष्ट करता है कि शरीर नश्वर है, अतः अहंकार त्यागकर सत्य की ओर अग्रसर होना ही बुद्धिमत्ता है। क्षणभंगुर जीवन की चेतावनी; जीवन की अस्थिरता को संत कबीर ने अत्यंत मार्मिक शब्दों में व्यक्त किया है—

पत्ता टूटा डाली से, ले गई पवन उड़ाय।
अबके बिछुड़े कब मिलें, दूर पड़ेंगे जाय।।

यह मानव जीवन अत्यंत दुर्लभ है। यदि यह व्यर्थ के विवादों, मतभेदों और बाह्य दिखावे में व्यतीत हो गया, तो पुनः ऐसा अवसर मिलना कठिन है।

परमात्मा का वास्तविक स्वरूपः- परमात्मा किसी बाहरी सीमाओं में बंधा हुआ नहीं है। वह सत चित्त और आनंद का अखंड स्वरूप है। उसकी वास्तविक आराधना बाहरी प्रदर्शन में नहीं, बल्कि जीवन के आचरण में निहित है— प्रकृति की रक्षा—नदियों, सरोवरों और सागर की शुद्धता बनाए रखना सत्य का पालन—असत्य का त्याग कर सत्य मार्ग पर चलना,कर्तव्यनिष्ठा—अपने दायित्वों का ईमानदारी से निर्वाह जब मनुष्य इन सिद्धांतों का पालन करता है, तभी वह परमात्म तत्व के समीप पहुँचता है।

सदाचार और लोककल्याण का मार्गः- मानव जीवन का उद्देश्य केवल व्यक्तिगत उन्नति नहीं, बल्कि ' सर्व जन हिताय, सर्व जन सुखाय' की भावना से कार्य करना है और यह मार्ग परस्पर प्रेम, प्रीति, समता और सदाचार का मार्ग है। यही वह आधार हैं, जिन पर सच्चा अध्यात्म खड़ा होता है। मन, वचन और कर्म से लोकहित में कार्य करना,सभी प्राणियों के प्रति करुणा और सहानुभूति रखना,सत्य और नैतिकता को जीवन का आधार बनाना यही तो वास्तविक धर्म और परमात्म तत्व की अनुभूति का सच्चा मार्ग है।

नाम-स्मरण और गुरु का महत्वः-संत तुलसीदास ने रामचरित मानस में संसार की असारता और राम नाम की महिमा प्रतिपादित करते हुए सब जीवों के घट में विचरण करने वाले राम तत्व पर बल देते हुए राम नाम सुमिरन को भव बंधन से मुक्त होने का कलियुग के लिए अत्यंत सरल और प्रभावी मार्ग बताया है-

कलियुग केवल नाम अधारा,
सुमिर-सुमिर उतरो भवपारा।

अर्थात इस युग में केवल नाम-स्मरण ही वह साधन है, जिसके द्वारा जीव भवसागर से पार हो सकता है। एक सच्चे और पूर्ण गुरु का मार्गदर्शन इस पथ को सरल बनाता है। गुरु द्वारा दिया गया उपदेश ही वह प्रकाश है, जो अज्ञान के अंधकार को दूर करता है। निरंतर सुमिरन, आत्मचिंतन और सदाचार के साथ जीवन जीना ही परमार्थ का वास्तविक स्वरूप है। निष्कर्ष रूप अध्यात्म का सार किसी बाहरी आडंबर में नहीं, बल्कि सत्य की अनुभूति, आत्मशुद्धि और लोककल्याण में निहित है। जब मनुष्य अपने भीतर के विकारों को त्यागकर, सत्य और प्रेम के मार्ग पर चलता है, तब वह न केवल स्वयं का कल्याण करता है, बल्कि समस्त सृष्टि के साथ सामंजस्य स्थापित करता है। यही वह अवस्था है, जहाँ मत-मतांतरों का भ्रम समाप्त हो जाता है और जीव परमात्म तत्व की अनुभूति कर लेता है। यही अनुभूति मुक्ति का मार्ग है।

डॉ. मनोहर
गोरे,थियोलॉजियन
Ontario,
(Canada)

डायलिसिस से जिले का कोई भी मरीज वंचित नहीं रहेगा - टेटवाल

जिला अस्पताल में स्वास्थ्य सुविधाओं का विस्तार 4 हाईटेक मॉड्यूलर ओटी का किया निरीक्षण मेजर, माइनर और ऑर्थो के लिए अलग - अलग ओटी की सुविधा

राजगढ़ (कैलाश शर्मा इंदौर समाचार)। रविवार को जिला मुख्यालय स्थित नवीन जिला चिकित्सालय में चार अत्याधुनिक मॉड्यूलर ऑपरेशन थिएटर (ओटी) का प्रदेश सरकार के राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) कौशल विकास एवं रोजगार विभाग गौतम टेटवाल ने निरीक्षण किया।

इस महत्वपूर्ण पहल से जिले में स्वास्थ्य सेवाओं को नई मजबूती मिली है तथा अब गंभीर सर्जरी के लिए मरीजों को इंदौर एवं भोपाल जैसे बड़े शहरों की ओर रुख नहीं करना पड़ेगा।

इस अवसर पर रा'यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री टेटवाल ने कहा कि प्रदेश सरकार का उद्देश्य प्रत्येक नागरिक को गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराना है। उन्होंने कहा कि 'जिले का कोई भी मरीज डायलिसिस जैसी आवश्यक सुविधा से वंचित नहीं रहेगा। स्वास्थ्य सुविधाओं का विस्तार हमारी सर्वो'च प्राथमिकता है।

संक्रमण मुक्त वातावरण में होगी सर्जरी- नवनिर्मित मॉड्यूलर ओटी अत्याधुनिक तकनीक से सुस'जत हैं, जिनमें आधुनिक एयर फिल्ट्रेशन सिस्टम एवं एंटी-बैक्टीरियल कोटिंग की सुविधा उपलब्ध है। इससे ऑपरेशन के दौरान संक्रमण की संभावना नगण्य हो जाती है और मरीजों को सुरक्षित उपचार मिल सकेगा। उन्होंने कहा कि ओटी के विभिन्न कक्षों का निरीक्षण कर वहां उपलब्ध मशीनों एवं व्यवस्थाओं की जानकारी भी ली गई तथा चिकित्सकीय स्टाफ से संवाद किया गया।

कलेक्टर डॉ. गिरीश कुमार मिश्रा ने इसे जिले के लिए बड़ी उपलब्धि बताते हुए कहा कि 'इन अत्याधुनिक मॉड्यूलर ओटी के माध्यम से न केवल सर्जरी की गुणवत्ता में सुधार होगा, बल्कि रेफरल प्रकरणों में भी कमी आएगी। विशेषज्ञ सेवाओं में वृद्धि के साथ अब जटिल ऑपरेशन जिले में ही संभव होंगे।